SAARC की कमजोर स्थिति BIMSTEC

SAARC

- SAARC यानी दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय संगठन के उत्पत्ति का विचार सर्वप्रथम 1980 में सामने आया।
- बांग्लादेश के तत्कालीन राष्ट्रपति जियाउर रहमान ने इस दिशा में काफी प्रयास किया और 1985 में SAARC का गठन हुआ।

संस्थापक सदस्य

1. बांग्लादेश
2. भारत
3. भूटान
4. मालदीव
5. नेपाल
6. पाकिस्तान
7. श्रीलंका

- 13 वें वार्षिक शिखर सम्मेलन, 2005 में अफगानिस्तान संगठन का 8 वां सदस्य बना।
- सचिवालय एवं मुख्यालय दोनों काठमांडू (नेपाल) में है।

पर्यवेक्षक देश

1. आस्ट्रेलिया
2. चीन
3. यूरोपीय यूनियन
4. दक्षिण कोरिया
5. म्यांमार
6. USA
7. ईरान
8. जापान
9. मॉरीशस

Result Mitra

महत्व

1. वैश्विक क्षेत्रफल का 3% की हिस्सेदारी

2. वैश्विक आबादी का 22% की हिस्सेदारी

3. वैश्वीक अर्थव्यवस्था में 3.9% की भागीदारी

उपलब्धियां

1. मुफ्त व्यापार क्षेत्र (FTA) –

2. SAARC देशों के बीच SAFTA वर्ष 2004 में लागू

3. सदस्य देशों के आंतरिक व्यापार में वृद्धि एवं व्यापार अंतराल में कमी की गुंजाइश

2. SAPTA

1.1995 में सार्क देशों के बीच व्यापार बढ़ाने के लिए स्थापना

2. SAFTA में केवल वस्तुएं ही शामिल थी, लेकिन SAPTA में सभी व्यापारिक वस्तुओं की सीमा शुल्क कम करने के लिए समझौता किया गया।

3. भारत में एक SAARC विश्वविद्यालय एवं पाकिस्तान में एक फूड में बैंक एवं ऊर्जा भंडार की स्थापना की गई है।

स्थापना में देरी के कारण

- दक्षिण एशिया में देशों पर शीत युद्ध का प्रभाव,
- भारत का विभाजन
- पाकिस्तान एवं बांग्लादेश का विभाजन
- दक्षिण एशिया में क्षेत्रवाद का प्रसार
- भारत पाकिस्तान के मूलभूत सिद्धांतों में अंतर
- यह दिलचस्प है कि शीत ऋतु के प्रभावों ने यूरोपीय संघ की स्थापना को प्रेरित किया, वहीं दक्षिण एशिया में ऐसे किसी क्षेत्रीय संगठन की स्थापना को रोके रखा।

भारत की अनिच्छा

- भारत एवं पाकिस्तान, दोनों SAARC के प्रति ज्यादा उत्साहित नहीं थे।

Result Mitra

- भारत को संदेह था कि संगठन के अन्य देश एकजुट होकर उनके खिलाफ हो सकते हैं एवं यह संगठन उसे क्षेत्रीय सीमितता में बाँध सकता है, जिससे वह अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में बड़ी भूमिका निभाने से वंचित रह सकता है।
- हालांकि SAARC के अन्य छोटे देशों ने यह सोचा कि संगठन उन्हें वैश्विक स्तर पर आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए मजबूत स्थिति उपलब्ध करवाएगा।

SAARC से भारत की दूरी

- भूटान के अलावा अन्य सदस्यों की सहायता से पाकिस्तान ने भारत को घेरने की कोशिश की।
- SAARC अन्य संगठनों की भाँति अनुकूल अंतर्राष्ट्रीय माहौल के बावजूद प्रगति नहीं कर सका।
- भारत को जब यकीन हो गया कि SAARC प्रगतिशील नहीं है, तब उसने इससे दूरी बनानी शुरू कर दी।
- प्रमाण के रूप में लुक ईस्ट पॉलिसी (1992) का प्रतिपादन, BIMSTEC की स्थापना (1997), गंगा-मेकांग सहयोग (2000) एवं BBIN मोटर वाहन समझौता (2015) है।
- उपरोक्त संगठन एवं मंचों के माध्यम से भारत में पाकिस्तान को दर किनार करते हुए क्षेत्र में अपने पहुंच को वितरित करने में सफल रहा।

शिखर सम्मेलन

- सामान्यतः राष्ट्री या सरकार प्रमुखों की बैठक
- सामान्यतः वार्षिक स्तर पर आयोजन
- 39 वर्षों के इतिहास में केवल 18 शिखर सम्मेलनों का आयोजन
- 18 वां एवं आखिरी शिखर सम्मेलन 2014 में काठमांडू में आयोजित किया गया था।
- 19 वां शिखर सम्मेलन 2016 में प्रस्तावित था, लेकिन उरी (जम्मू कश्मीर) आतंकी हमले के कारण भारत पाकिस्तान में आयोजित इस शिखर सम्मेलन का बहिष्कार किया एवं स्थगित हो गया।

लुक ईस्ट पॉलिसी

- 1992 में तत्कालीन प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हा राव द्वारा नीति का शुभारम्भ
- USSR के पतन के बाद दक्षिण एशियाई देशों एवं USA के साथ संबंध बेहतर करना उद्देश्य
- चीन के रणनीतिक प्रभाव के प्रति संतुलन के लिए नीति का क्रियान्वयन

एक्ट ईस्ट पॉलिसी

- पीएम नरेंद्र मोदी द्वारा 2014 में नीति का प्रतिपादन
- लुक ईस्ट का अपग्रेडेड वर्जन

Result Mitra

BIMSTEC

- बंगाल की खाड़ी बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग यानी BIMSTEC की स्थापना वर्ष 1997 में
- बंगाल की खाड़ी के समीपवर्ती देश इसके सदस्य
- 'बैंकॉक घोषणा' के द्वारा स्थापित

संस्थापक सदस्य

1. भारत
2. श्रीलंका
3. बांग्लादेश
4. थाईलैंड

शुरुआत के नाम BIST-EC

- 1997 में म्यांमार के शामिल होने से नाम BIMSTEC
- 2004 में भूटान एवं नेपाल शामिल
- 5 सदस्य दक्षिण एशिया, जबकि 2 देश थाईलैंड एवं म्यांमार दक्षिण पूर्व एशिया से संबंधित
- वैश्विक आबादी में 22% की हिस्सेदारी
- वैश्विक GDP में लगभग 5% की हिस्सेदारी
- इस संगठन का एक विशेष महत्व यह है कि दुनिया दुनिया की कुल वैश्विक व्यापार का 25% व्यापार बंगाल की खाड़ी से गुजरता है।
- केलादान मल्टीमॉडल परियोजना, भारत एवं म्यांमार के बीच है।
- एशियाई त्रिपक्षीय राजमार्ग म्यांमार, भारत एवं थाईलैंड को जोड़ता है। बांग्लादेश-भूटान-भारत एवं नेपाल (BBIN) मोटर वाहन समझौता के 4 सदस्यों की ही परियोजना है।

हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (IORA)

- सर्वप्रथम नेल्सन मंडेला के 1995 में भारत दौरे पर विचार का प्रस्तुतीकरण
- 1997 में स्थापना
- वर्तमान में 22 सदस्य एवं 11 संवाद भागीदार

सदस्य देश

1. भारत

Result Mitra

2. ऑस्ट्रेलिया

3. केन्या

4. बांग्लादेश

5. फ्रांस

6. इंडोनेशिया

7. कोमोशेस

8. ईरान

9. मेडागास्कर

10. मॉरीशस

11. मलेशिया

12. मालदीव

13. मोजांबिक

14. सिंगापुर

15. दक्षिण अफ्रीका

16. थाईलैंड

17. UAE

18. यमन

19. तंजानिया

20. श्रीलंका

21. सेशल्स

22. सोमालिया

23. ओमान

सचिवालय मॉरीशस में है।

गंगा मेकांग सहयोग

- वर्ष 2000 में लाओस के वियतनाम वियनतियाने में पहल की शुरुआत
- पर्यटन, संस्कृति, शिक्षा, परिवहन एवं संचार सहयोग को बढ़ावा देना उद्देश्य सदस्य देश :-

1. भारत

Result Mitra

2. कंबोडिया

3. लाओस

4. म्यांमार

5. थाईलैंड

6. वियतनाम

भारत के अलावा सभी ASEAN के सदस्य,

BBIN कनेक्टिविटी परियोजना

- 15 जून 2015 को थिंपू में भारत, बांग्लादेश, भूटान एवं नेपाल के परिवहन मंत्रियों के बीच चारों देशों के बीच व्यक्तिगत, यात्री एवं कार्गो परिवहन के विनियमन के लिए समझौते पर हस्ताक्षर।

ASEAN

- 1967 में बैंकॉक घोषणा स्थापित
- इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलीपींस, सिंगापुर एवं थाईलैंड संस्थापक सदस्य ब्रुनेई (1984), वियतनाम (1995), लाओस एवं म्यांमार 1997 में एवं कंबोडिया 1999 में सदस्य बना।